Vol 3 Issue 10 April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

मुल्ला दाऊद का 'चंदायन' सौन्दर्य, प्रेम तथा वीरता की त्रिवेणी

fÁ;ıdk

fgUnh foHkkx] Tkhñ ,Ekñ ,Ukñ dkyst] vEckyk dV A

सारांश :-

सौन्दर्य ही प्रेम की वह खेती है, जिस पर प्रेम रूपी बीज का अंकुरण होता है। सौन्दर्य के बिना प्रेम का अर्थ नहीं। सौन्दर्य में नारी सौन्दर्य को प्रमुख माना गया है। सौन्दर्य में मुग्ध होकर मनुष्य अपने आपको विस्मरण कर देता है। वह अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार हो जाता है। सौन्दर्य एक प्रकार 'स्पार्क' है, जैसे दो पत्थरों के टकराने से जो चिन्गारी निकलती है, यह वही है। प्रेम उन दोनों पत्थरों की चिन्गारी से लगाई जाने वाली आग है, जो सब कुछ जला डालने की क्षमता रखती है। इसी क्षमता को साहस और वीरता का नाम दिया जाता है। निडरता, साहस इसी के बिन्दु हैं। प्रेम में मनुष्य बड़ी–बड़ी कठिनाइयों को पार कर देता है। बड़ी से बड़ी चुनौती को भी विछिन्न कर डालने से नहीं कतराता। इस तरह मुल्लादाऊद कृत चंदायन भी इसी तरह प्रबंधकाव्य है जिसमें यह त्रिवेणी निरन्तर गतिमान होती दिखाई देती है।

प्रस्तावना :

वाचस्पत्य कोश में 'सुन्दर' शब्द की व्युत्पति 'सु' उपसर्ग पूर्वक 'उन्द' धातु में 'अरन' प्रत्यय जोड़कर हुई है। जिसका अर्थ हुआ– 'अच्छी तरह से आर्द्र करने वाला।' संस्कृत हिन्दी कोश में 'सुन्दर' शब्द की व्युत्पति 'सुन्द् +अर् से की गई है।' सौन्दर्य शब्द अपने परिभाषिक अर्थ में अंग्रेजी के 'ब्यूटी' शब्द का पर्याय है। ललित, सुष्ठु, काम्य, कमनीय तथा रमणीय आदि इसके पर्यायवाची हैं। पंडित जगन्नाथ के अनुसार, 'रमणीयता च लोकातराह्लादजनक ज्ञान गोचरता।'' अर्थात् रमणीयता या सौन्दर्य मन को रमाने वाला रूप है।' सुकरात के अनुसार, 'जो नेत्र और श्रवण के माध्यम से प्रीतिकर हो, वही सुन्दर हैं।' आई. ए. रिचर्ड के अनुसार, 'सौन्दर्य वह गुण या गुणों का संश्लेष है, जो इन्दियों को तीव्र आनन्द प्रदान करता है, प्रधानतः चाक्षुष आनन्द तथा अन्य इन्द्रियों तथा बौद्विक भावनाओं को आनन्द प्रदान करना है।' रूप गोस्वामी सौन्दर्य के संबंध में कहते हैं–

'भवेत्सौन्दर्यमगानां सन्निवेशी यथोचितम्।'

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सौन्दर्य को बाहर की वस्तु न मानकर अन्तर्मन की वस्तु स्वीकारते हैं। महादेवी सौन्दर्य को सत्य प्राप्ति का साधन मानती हैं। इस तरह सौन्दर्य के संबंध में विभिन्न मत दृष्टिगत होते हैं।

चंदायन सूफी प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम काव्य है, जो महाकाव्यत्मकता लिए हुए है। इसकी रचना 781 हिजरी (1379ई.) में सम्पन्न हुई। मौलाना दाऊद ने इसमें नख–शिख के माध्यम से परम सौन्दर्य को अभिव्यक्त करने का जो प्रयास किया उसका प्रभाव मृगावती, पदमावत तथा मधुमालती पर भी पड़ा। 'चंदायन' में मुल्ला दाऊद ने नखशिख के वर्णन में जो शैली अपनाई वह बाद मे कवियों के लिए आदर्श भूमि साबित हुई। चंदायन का नखशिख वर्णन चंदा की मांग से शुरू होता है और उसके पैर के सौन्दर्य पर जाकर समाप्त होता है। मुल्लादाऊद का सौन्दर्य चित्रण अप्रतिम है, अद्वितीय है।

मुल्ला दाऊद के युग में राजनीतिक–व्यवस्था अस्त–व्यस्त थी। तत्कालीन सत्ता खिलजीवंश से निकलकर तुगलक शासकों के हाथों में पहुंच गई थी। यह युग दो विभिन्न संस्कृतियों के मिलन का युग था। युगीन भारतीय और इस्लामी जीवन पद्धतियां एक–दूसरे को प्रभावित कर रहीं थी। उधर इन गतिविधियों से प्रायः असम्पृक्त लोकमानस का स्वतंत्र विकास हो रहा था। दाऊद ने इन सब के गहन अध्ययन एवं सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा समसामायिक परिस्थितियों, स्थितियों, धर्म, नीति, सम्प्रदाय, सभ्यता–संस्कृति आदि का समुचित अंकन अपने साहित्य के माध्यम से किया। चंदायन उनके विचारों तथा अनुभवों का पुलिंदा ही कहा जा सकता है। इस प्रबन्ध काव्य के माध्यम से उन्होंने निराश जनसामान्य में भक्ति, प्रेम, वीरता और विश्वबन्धुता की भावना को जागृत करने का प्रयास किया है।

मुस्लिम शासक अपनी क्रूरता, बर्बरता, नृशंसता तथा धर्मान्धता के कारण आम जनता के दिलों से कोसों दूर थे। वे अपने भोग विलास में निर्लिप्त रहते थे, आम जनता के लिए उनके पास समय नहीं था। उनके अत्यचारों तथा अन्याय से आम जनता निराश हो चुकी थी। उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। लेकिन उस युग में साधु, संतों तथा फकीरों के प्रयासों के बावजूद उनकी स्थिति में सुधार हुआ। इस समय में हिन्दी का प्रचार बहुत ही कम था। साहित्य रचना के क्षेत्र में उसकी प्रतिष्ठा अधिक न थी। प्रेम कथाओं के लेखन की परम्परा भी अधिकतर संस्कृत में ही थी। हिन्दी में लौरिक–चंदा की प्रेम कथा लिखकर मुल्ला दाऊद ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस दृष्टि से मुल्ला दाऊद द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। अवधि भाषा के लोक–प्रचलित रूप को 'चंदायन' के सहारे साहित्यिक रूप में परिणत करने का महान् श्रेय मुल्ला दाऊद को ही जाता है। लोक गाथा में लोकजीवन को लोकभाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने का अद्वितीय कार्य करने का श्रेय भी मुल्ला दाऊद को ही जाता है।

मूल्ला दाऊद सूफी काव्यधारा के अगुआ रहे हैं। सूफी प्रेमकाव्य की रचना करने वाले प्रथम कवि हैं। उन्होंने अपने परवर्ती सूफी कवियों को पूर्णतः प्रभावित कर, उनका मार्ग दर्शन किया। सांस्कृतिक दृष्टि से 'चंदायन' एवं अन्य सूफी प्रेमाख्यानों का बहुत महत्व है। जब हिन्दू एवं मुसलमान शासकों के बीच दुर्भाव बढ़ता जा रहा था तब दाऊद एवं अन्य सहृदय साधक कवियों ने भारतीयों एवं मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय का सफल साहित्यिक प्रयत्न किया था जिससे भिन्न होती हुई जनता स्नेह एवं सद्भाव के एक सूत्र में बंध सकी थी।

सूफियों के प्रेमकाव्य में रहस्यावाद का पुट मिलता है। उनके सम्पूर्ण साहित्य में दोहरे अर्थ की प्रतीति होती है। सूफियों ने प्रेम को सर्वोपरि माना है। परमात्मा के प्रति मनुष्य का प्रेम एक ऐसा लोकोतर गुण है, जो परमात्मा पर विश्वास करने वाले साधक के हृदय में श्रद्धा और आलोक के रूप में स्वयं को प्रकट करता है। अपने प्रिय की संतुष्टि और उसे प्राप्त करने की उत्कंठा प्रेमी को प्रत्येक क्षण बैचेन बनाए रहती है। इस स्थिति में वह सांसारिक कलेशों से मुक्त हो जाता है। ईश्वर के प्रति प्रेम को प्राप्त करने के लिए कठोर यंत्रणाएं सहन करनी हैं। सूफी कवियों ने प्रेम को प्रियतम तक पहुंचने का साधन माना है, प्रेम के आचरण के बिना प्रियतम तक पहुंचना ही असंभव है।

सूफियों का प्रियतम परम ब्रह्म परम सौन्दर्य रूप है। वे प्रियतम ब्रह्म को नारी रूप में प्रेमी साधक को पुरुष मानते हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि सूफी काव्यों की नायिकाएं आध्यात्मिक धरातल पर सूफी साधकों के प्रियतम अर्थात् परमात्मा है और नायक साधक रूप आत्मा है। आत्मा के द्वारा परमात्मा को प्रेम के माध्यम से प्राप्त कर लेना ही सूफी साधना का परम लक्ष्य है।

नखशिख वर्णन के अतिरिक्त नायिकाओं के सुन्दर स्वरूप का वर्णन उनके जन्म तथा योवनागम के असवर पर, नायक को जब उनका प्रथम परिचय दिया जाता है उनके विवाह तथा मिलन के अवसरों पर किया गया है। काव्य में अन्य पात्र भी उसमें आलौकिक संकेत देते रहते हैं। सूफी प्रेम काव्यों की आधारशिला प्रेयसी नायिकाओं का यही सौन्दर्य है। काव्य नायक उनके बाह्य रूप सौन्दर्य की एक झलक साक्षात् दर्शन, गुण, श्रवण, चित्रदर्शन आदि के माध्यम से प्राप्त करते ही मूर्छित होता है, उसमें तीव्र रूपाकर्षण से जो प्रेम उद्भुत होता है वह विरह पीड़ित हो गृह त्यागकर उसकी प्राप्ति में जीवन का चरम लक्ष्य–आनन्द जिसमें परमानंद निहित होता, के लिए साधना रत हो जाता है। यही सौन्दर्य उसका साध्य है, इसी के माध्यम से परम सौन्दर्य के दर्शन करता है।

सौन्दर्य वह वस्तु है जिससे प्रेम उत्पन्न होता है। सौन्दर्य का सर्वप्रथम गुण आकर्षण है। देखने वाला सौन्दर्य को देखकर भावाभिभूत हो जाता है। नारी सौन्दर्य सृष्टि के आदिकाल से मानव सौन्दयानुभूति का केन्द्र रहा है। उसका सौन्दर्य ही प्रेम का केन्द्र बनता है। समस्त आकर्षण तथा प्रेम का केन्द्र नारी सौन्दर्य है। सौन्दर्य ही प्रेम का वह मार्ग हैं जहां मनुष्य भूला–भटका ही चला जाए, तो वापिस नहीं आता। प्रेम में वह सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हो जाता है। सूफी कवि मुल्ला दाऊद सौन्दर्यपासक रहे हैं। उनका सम्पूर्ण दर्शन सौन्दर्य तथा प्रेम पर आधारित है। 'चंदायन' की नायिका का सौन्दर्य अप्रतिम, ललित तथा मनमोहक रूप में उपलब्ध रहा है।

सूफियों का प्रियतम परम ब्रह्म सौन्दर्य रूप है। वे प्रियतम ब्रह्म को नारी रूप और प्रेमी साधक को पुरुष रूप मानते हैं, कहने का तात्पर्य है कि सूफी काव्यों की नायिकाएं आध्यात्मिक धरातल पर, सूफी साधकों के प्रियतम अर्थात् परमात्मा को प्रेम के माध्यम से प्राप्त कर लेना ही सूफी साधना का परम लक्ष्य है। सूफी प्रेमख्यानों में प्रेम वस्तुतः एक साधनात्मक प्रक्रिया है। 'पद्मावत' में जायसी ने 'चन्दायन' के कथा संयोजन का तथा अभिव्यक्ति पक्ष में रूप सौन्दर्य के चित्रण में अनेक अलंकारों का अनुशीलन 'चन्दायन' जैसा ही किया है। चंदा की भेंट शिव मन्दिर में लोरिक से होती है जो साधु रूप में होता है। चंदायन के सौन्दर्य का निरूपण करते हुए उसे मुल्ला दाऊद ने आलौकिक सौन्दर्य से मंडित दिखाया है। सूफियों की मान्यता के अनुसार, 'लौकिक सौन्दर्य में पूरी तरह डूबकर ही साधक प्रियतम परमात्मा के आलौकिक सौन्दर्य की आनन्दनुभूति अर्जित कर सकता है।' निस्संदेह 'चंदायन' में सौन्दर्य निरूपण पद्मावत जैसी अलौकिक अनुभूति का आभास कराने में सार्थक सिद्व नहीं होती। सम्पूर्ण सूफी काव्यों का उद्देदय मानवता कल्याण और दो विरोधी संस्कृतियों का परस्पर मिलन रहा है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सूफी कवियों ने प्रायः हिन्दू घरों में प्रचलित पारम्परिक प्रेमकथाओं का सहारा लिया और इन्हीं कथाओं में दोनों धर्मों और साधना पद्धतियों का मिश्रणकर, अद्भुत रचनाएं प्रस्तुत की हैं।

चन्दायन के रचनाकाल के विषय में पर्याप्त विवाद रहा है, परन्तु अब बीकानेर प्रति के अनुसार इसका रचनाकाल निश्चित रूप से सिद्ध हो चुका है।

'बरस सातै (त) से होये इकयासी।
तिहि याह कवि सरसे (स) उभासी।'

अतः इसकी रचनाकाल हिजरी सन् 781 (1379 ई.) माना जाता है। इस काव्य रचना का कथानक इस प्रकार से है कि चंदा गोवर के महर सहदेव की रूपवती कन्या थी। चार वर्ष की अवस्था में ही उसका विवाह जइत के पुत्र बावन से हो गया। बारह वर्ष व्यतीत हो गए। लेकिन चंदा का पति से शारीरिक संयोग नहीं होता। पति के अवहेलना के उपरान्त वह अपनी पितृगृह लौट आती है। गोवर में बाजुर नाम का भिक्षुक झरोखे से झांक रही चंदा के रूप सौन्दर्य देखकर मूच्छित हो जाता है। वह एक मास उपरान्त राजपुर पहुंचकर राजा राव रूप चंद का को चंदा के रूप सौन्दर्य का मधुर वर्णन करता है जिससे वह उसे पाने के लिए लालायित हो उठता है। मुल्ला दाऊद चंदा के रूप सौन्दर्य का वर्णन भिक्षुक के माध्यम से करते हुए लिखते हैं–

बनखंड जइस चले अति कारे। उनए जानु मेघ अंधकारे।
चलन लाग जनु चलहि पहारा। छांह परइ जग या अंधियारा।

चन्दायन, पृ. 87

पहिले मां के कहउं सोहागु। जेहिं राता जुग मेलह फागु।
मांग चोरि सिर सेदुर पूरा। रेगि चला जनु कानकेजुरा।।

चन्दायन, पृ. 87

सुनहु चीरू कस पहिर गोवरी। फुंदिया 'राधि सेंदरियां' सारी।
पहिर मेघवना' अउ कुसियारा। जुगिया चोर चौकड़िवा सारा।
मुर्गिया पतलि अंग चढ़ाई। मंडिला छुदरी फिरि पहिराई।
सावन चांद कसुंभी राती। इक खंड छाप से 'सोह' गुजराती।
डोरिया चंदरौटा ओ अबजारू। साज पटोराई बहुत सिगारू।
चोला चीर पहिरि जए चाली। जानउं जाइ उड़ाई
देखत रूप देवता बिमोहे। कत हुते आछहि आई।

चन्दायन, पृ. 81

इस तरह मुल्ला दाऊद चंदा के अप्रतिम रूप सौन्दर्य का वर्णन प्रस्तुत करते हैं। कथानक को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं कि चंदा के पिता को राजा रूप चंद की यह शर्त मंजूर नहीं होती तथा दोनों के बीच युद्ध होता है। इस युद्ध में लोरिक चंदा के पिता की मदद करता है और उनकी विजय होती है।

महर सहदेव चंदा के पिता ने विजयोत्सव मनाया जिसमें चंदा लोरिक के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो बैठती है। लोरिक जोगी का भेष बनाकर एक वर्ष तक चंदा के दर्शन करने के लिए मंदिर में पड़ा रहता है। इस तरह एक दिन चंदा अपनी सहेलियों के साथ मंदिर पहुंचती है और लोरिक उसका रूप सौन्दर्य देखकर कर मंत्रमुग्ध हो उठता है और वेहोश हो जाता है। कुछ लोगों के सहयोग से दोनों में प्रेम संबंध स्थापित होता है। शादी से पहले ही पति–पत्नी जैसे सुख का भोग कर लेते हैं। कुछ दिन चंदा ने लोरिक को संदेश भेजा कि उसे भगाकर ले जाए। दोनों वेश बदलकर निकले। मार्ग में लोरिक का भाई कुंवरू मिला जिसने लोरिक के इस कार्य की निन्दा की परन्तु लोरिक ने किसी प्रकार उसे समझा–बुझा दिया तथा विदा ली। चंदा ने और लोरिक भागकर गंगा पर करते हैं लेकिन बावन उनका पीछा करते पहुंच जाता है। दोनों में युद्ध होता है और बावन परास्त हो जाता है। लेकिन युद्ध वह दुखावस्था में लोरिक को शाप देता है कि वह यमपुर में राज करेगा तथा चंदा को सांप डसेगा।

कंलिग राज्य में पहुंच कर उन्हें नयी विपत्ति का सामना करना पड़ा। बोढ़ई नाम के दानी ने चंदा को कर के रूप में मांगा। दोनों पक्षों में युद्ध हुआ। बोढ़ई ने प्राण दान मांग अपनी जान बचाई। वहां के राजा ने चंदा और लोरिक दोनों का सम्मान किया तथा वहां रूकने के लिए कहा परन्तु वे नहीं रूके। चलते–चलते वे एक ब्रह्मण के घर रूके जहां चंदा को सांप ने डस लिया। एक गूंगी की सहायता से चंदा जीवित हो जाती है। उसके बाद वीर लोरिक और चंदा हरदी पाटन पहुंचे जहां वे राजा छेतम के राज्य में सम्मानपूर्वक एक वर्ष तक रहे।

उधर मैना लोरिक के वियोग में दुखी थी। उसने अपनी व्यथा एक टांडा को सुनाई जिसने वह लोरिक तक पहुंचा दी। इस तरह लोरिक वापस राज्य लौट आता है। दोनों में मेल–मिलाप होता है। मैना और चंदा में कहा–सुनी होती है लेकिन लोरिक उन्हें समझा देता है। इस तरह लोरिक अपने परिवार से मिलता है और मां उसे सारे हाल सुनाती है। खोलिन ने बताया कि उसे जाने के बाद बावन आया था तथा मैना और बैनां को लिए जा रहा था। अजई ने रक्षा की। महर के संकेत पर मानकर उसकी गायों के हांक ले चला। कुंवरू उससे युद्ध में मारा गया। इस प्रकार वह इन दिनों बहुत संतप्त रही।

इस रचना का अंतिम अंश उपलब्ध है लेकिन डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने लोगगााथा रूप के आधार पर दो संभावनाओं की ओर संकेत किया– मां से समाचार पाकर लोरिक तुरन्त माकर को जा ललकारता है। दोनों में युद्ध होता है। मारकर मारा जाता है। तदनंतर माकर के बेटे देवरिया से युद्ध होता है, जिस में लोरिक मारा जाता है। अन्य क्षेत्रीय रूप से अनुसार देवरिया मारा जाता है। परन्तु इसके अनंतर वह किसी अन्य कारण से काशी जाकर जल मरता है। डॉ. गुप्त ने लोरिक की मृत्यु के उपरान्त चंदा तथा मैना के देह–त्याग की संभावना भी मानी है। उन्होंने दूसरे अनुमान रूप में डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त ने इसके अंत के विषय में लिखा है– 'अपनी मां की कष्ट कथा सुनकर लोरिक अपने शत्रुओं के विनाश में रत हुआ होगा, पश्चात् अपनी दोनों पत्नियों के साथ सुख–पूर्वक जीवन बिता कर स्वर्ग सिधारा होगा।''

मुल्ला दाऊद ने अपने इस काव्य में नायिका के रूप सौन्दर्य ही नहीं किया, उन्होंने नायक के भी रूप सौन्दर्य का वर्णन पूर्ण रूप से उकेरा है। काव्य में प्रथम प्रेमोन्मेष नायिका चंदा के हृदय में होता है। 'गोबर युद्ध' में जब वह लोरिक के अप्रतिम सौन्दर्य को देखती है तो अभिभूत हो उठती है, उसमें प्रेम चिन्गारी सुलगती है। इस प्रेम चिंगारी का वर्णन करते हुए मुल्ला दाऊद लिखते हैं–

चांदहि लोरिकु निरखि निहारा। देखि विमोही गई बेकरारा।
सूरजि सनुह चांद कुबिलानी। आई बिरसपति छिरका पानी।''

मुल्लादाऊद की राह पर चलते हुए जायसी ने भी सूफी प्रेमकाव्यधारा प्रकाशायमान बनाया। उन्होंने पद्मावत लिखकर यह साबित कर दिया है कि वे प्रेम को ही सर्वोपरि मानते हैं। यह वही राह है जिसे मुल्लादाऊद ने अपने प्रबंध काव्य में चंदा और लोरिक के माध्यम से व्यक्त किया है। जायसी प्रेम के मार्ग पर अग्रसर होने वाले साधक की तीन श्रेणियां बताते हैं– पहले चोर, जो केवल पाने के इच्छुक हैं, यद्यपि इसके लिए उसे कुछ खतरा भी मोल लेना होता है, दूसरा जुआरी, जो अभिमत की प्राप्ति के लिए अपनी समस्त सम्पति तथा पूंजी को दांव पर लगा देता है। तीसरा मरजिया, जो अपने प्राणों की भी बाजी लगा देता है। पद्मावत तथा प्रेमपयोनिधि के नायकों में तीनों ही विशेषताएं

समाहित हैं जो उतरोतर अपना स्वरूप बदलती जाती हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'चंदायन' मुल्ला दाऊद तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप लिखा गया प्रबन्ध काव्य है जिसे सौन्दर्य, प्रेम तथा वीरता की त्रिवेणी कहा जा सकता है। 'चंदायन' में चंदा के रूप सौन्दर्य का अनूठा चित्रण मुल्ला दाऊद के इस प्रबन्ध काव्य के प्राण है। प्रेम का बेजोड़ संगठन, तड़फ तथा मिलन इस काव्य रचना की आत्मा हैं। वीरता के रूप में लोरिक का एक वीर के रूप में चित्रण इसका सार्थक प्रमाण है। वह विभिन्न परिस्थितियों तथा घटनाओं से उबरकर आता है। उसके द्वारा विभिन्न युद्धों में विजय प्राप्त करना उसकी वीरता का प्रतीक है। इस तरह 'चंदायन' मुल्लादाऊद का सूफी विचारधाराओं पर आधारित प्रेम तथा सौन्दर्य के अलावा वीरता की भी प्रमाणिक तस्वीर प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. माता प्रसाद गुप्त, भूमिका, चंदायन, 1967
2. डॉ. परमेश्वर लाल गुप्त, भूमिका, चंदायन, 1964
3. डॉ. रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, 1964
4. डॉ. विमल कुमार जैन, सूफीमत और हिन्दी साहित्य, 1955
5. डॉ. नगेन्द्र आस्था के चरण।
6. बिहारी, बिहारी रत्नाकर, दोहा।
7. रत्नाकर, ग्रंथावली, उद्धव शतक।
8. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, कामसर्ग।
9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जायसी ग्रथावली की भूमिका।
10. श्रीकांत खरे, सौन्दर्य के मूल तत्व, इलाहाबाद, किताब महल, 1987
11. शास्त्री श्याम नंदन, काव्यांग विवेचन, पटना, भारती भवन, 1953
13. मुल्लांदाऊद, चंदायन।
14. रूपगोस्वमी, उज्ज्वल नीलमणि, उद्दीपन प्रकारण।
15. हरिदास, सूर का श्रृंगार वर्णन।
16. डॉ. रमाशंकर तिवारी, महाकवि कालिदास में कालिदास की काव्य कला, प्रथम विभाग।
17. डॉ. वेद प्रकाश जुनेजा, भारतीय एवं पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र,।
18. गिल्वर्ट ऐंड कून्न, ए हिस्टरी ऑफ ऐस्थिेटिक्स द्वि. सं. ।
19. डॉ. नगेन्द्र, भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका।
20. शकुन्तला शर्मा, आधुनिक काव्य में सौन्दर्य भावना।
21. टॉलस्टॉय, ह्वट इच ऑर्ट।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net